वर्धिल् AK. 3, 1, 28. Med. n. 121. (क्रि:) कर्माएयारभते कर्त कीनाश इव वर्धनः wie ein Geizhals, der immer reicher und reicher wird, MBu. 5, 2536. - b) mehrend, stärkend; ergötzend, begeisternd; Wachsthumgeber, Mehrer u. s. w.: इयं ते गी: सदमिद्वर्धनी भूत् R.V. 10,4,7. युक्ती व्हि ते इन्द्र वर्धना भूत 3,32,12. 5,73,10. 7,22,7. 8,51,4. क्विषा वर्धनेन त्रा-तार्मिन्द्रमक्राणार्वध्यम् vs. 8, 46. या वर्धन स्रोषधीनाम् Rv. 7, 101, 2. स्तार्मस्य 8,8,5. ेनी राष्ट्रस्य Air. Ba. 8, 7. म्राजम: Suça. 1, 175, 10. als Beiw. Çiva's Wachsthumgeber MBu.13,1232. In comp. mit dem obj.: Tu-ताग्रि॰ Suça. 1,217,21. विष॰ Spr. 489. वित्त॰ M. 10,85. मिशि॰ Spr. 4839. वर्ष ° UTTARAR. 66,8 (85,8). संतान ° Jåón. 1,90. मान ° M. 9,115. कीर्ति ° МВн. 1, 121. ॡ च्छ्य ° 3, 2154. 주덕 ° Напіч. 6369. 14554. R. 1, 1, 17. 2, 45, 7. 3, 79, 24. 5, 80, 30. 86, 13. Spr. 4250 (fem.). Råća-Tar. 3, 137. Вийс. Р. 3,4,34. 19,38. 5,1,23. 7,1,4. 8,22,28. Verz. d. Oxf. H. 20,b,7. 68, a, No. 119, Z. 10. सञ्च o fördernd Bulg. P. 1,7,2. ऋपवार्ग o 3,25,12. पा o Wohlfahrt verleihend Haniv. 8187. का ि erfreuend MBs. 1,1739. 14,403. केकप॰ R. 7,38,13. मनानयन॰ ergötzend Bulg. P. 3,28,16. 4, 8,49. - 2) m. a) Ueberzahn Suça. 1,303,10. 304,13. - b) N. pr. eines Wesens im Gefolge Skanda's MBH. 9,2540. eines Sohnes des Krshna von der Mitravinda Buac. P. 10,61,16. - 3) f. 3 a) Besen H. 1016. HALÂJ. 2,147. - b) ein Wasserkrug von best. Form H. 1021, v. l. an. 3, 411. MED. HALÂJ. 2, 162. PANKAB. 3, 6, 7. GÂBUDA-P. 48 im ÇKDR.; vgl. वार्धनी. - 4) n. a) Wachsthum, Zunahme; = विद्य Тык. 3,3,249. H. an. Med. ईक्ते मांसशाणितवर्धनम् MBa. 12,12053. कुलस्य R. 1,13,55. पश्चाम: 2,74,26. das Gedeihen, Mächtigwerden Spr. 1828. 2755. स्वपदा R. 6,11,11. — b) Vergrösserung: वेदि॰ Kats. Çr. 8,8,22. श्राशानाम Spr. 651. - c) Stärkungsmittel; Ergötzung, Begeisterung RV. 1, 10, 10. 52,7. 80,1. यस्य ब्रह्म वर्धनं यस्य साम: 2,12,4. 39,8. 8,81,5. 10,49,1. या भी-त्रनं च दर्यसे च वर्धनम् 2, 13, 6. 3, 36, 1. 8, 1, 3. इदम्च्यते वर्चः स्वादेाः स्वादीया फ्रहाय वर्धनम् 1,114,6. 140, 3. Nin. 4,19. — d) das Aufziehen, Grossziehen: बालिया: Kathas. 21,119. — Vgl. म्राउ, म्रशाक, उक्य, कन्द॰, कपा॰, कमल॰, कुल॰, केश॰, क्रोध॰, तत्र॰, गे।॰, चाप्तवर्धना, दे-ववर्धन, खुम्न॰, प्रव्य॰, धर्म॰, धान्य॰, नन्द॰, नन्दि॰, नृम्णा॰, पशु॰, पुराउँ॰, प्राप्त (als adj. Verdienst mehrend Harry, 14554), पृष्टि , प्रभाकर , बल , ब्रह्म॰, भूमि॰, भाग॰, मति॰, मित्र॰, मेह्न॰, यज्ञ॰, रृक्त॰, रृति॰, रृत्त॰, राजः, राज्यः, रामः, राज्यः, राष्टः, लहिमः (unter लहिम), लिङ्गः, वंशः, शंकर्ः, शंभुः, स्तामः

2. ลย์ล (von 2. ลย์) n. das Abschneiden AK. 3,3,7. Тык. 3,3,219. H. 372. an. 3,411. Med. n. 121. Ный. 4,44. — Vgl. 利裕.

वर्धनसृति m. N. pr. eines Gaina-Lehrers Wilson, Sel. Works I,294. वर्धनस्वामिन् m. Bez. eines best. Heiligthums (einer Statue) Râéa-Tar. 3,357. 6,191.

वर्धनिका (von वर्धन) s. चतुर्वधिनिका. Nach Vjure. 208 ist वर्धनिका bei den Buddhisten ein zur Außewahrung geheiligten Wassers dienendes Fläschchen (abgebildet bei Pallas, Sammlung hist. Nachr. über die mongolischen Völkerschaften II, Pl. IX, Fig. 22). In dieser Bed. vielleicht nur fehlerhaft für वाधानिका.

वर्धनीय (vom caus. von 1. वर्ध्) adj. zu mehren, zu verstärken: मित R. Gora. 2,23,12. गर्व Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 7,9, Çl. 33. dessen Wohlsahrt zu sördern ist: ज्ञातिया वर्धनीयास्तिर्य इच्छ्ल्यात्मनः श्रु-भम् MBH. 5,1463. 7,6421. HARIV. 5747.

वर्धमान (von 1. वर्ध्) 1) adj. s. u. वर्ध्. — 2) m. Ricinus communis (wegen seines starken Wuchses so genannt) AK. 2,4,2,32. TRIE. 3,3,249. H. an. 4, 188. Med. n. 205. Har. 108. Sugn. 2, 284, 7. - 3) m. süsse Citronen Ragan. im CKDn. auch f. 37 ebend. - 4) Bez. einer best. Figur Vanih. Brh. S. 50, 2. 71, 5. 79, 21. 94, 2. Lalit. ed. Calc. 122, 20. 334, 18. - 5) m. n. eine Schüssel von best. Form TRIE. H. 1024. H. an. Мвр. Нав. 167. Нагал. 2,160. Мвн. 7,2930 (m.). तिलपर्णानि वर्धमानानि 13,3263. 4243. Suça. 1,107,5. — 6) m. n. ein Haus, das nach der Südseite keinen Ausgang hat, H. an. Halaj. 2, 150. Varah. Brh. S. 53, 33. 36. R. 5, 10, 4. चतुःशालं दितिपाद्वार्रकीनं त् वर्धमानम्दाकृतम् Matsia-P. 241 (nach Aufrecht). - 7) m. Bez. einer best. Verbindung der Hände Verz. d. Oxf. H. 86,a,33.202,a,18.b,24. - 8) f. Al eine Gajatri mit 6, 7, 8 (8, 6, 8) Silben RV. PRAT. 16, 15. fg. COLEBR. Misc. Ess. II, 152 (1,7). Ind. St. 8,239.fg. - 9) n. ein anderes Metrum Coleba. Misc. Ess. II, 165 (VII, 2). Ind. St. 8, 356. fg. - 10) m. eine Art Räthsel (प्रश्निट) TRIK. H. an. Med. — 11) m. Bein. Vishņu's Taik. 1,1,32. 3,3,249. H. c. 68. H. an. Mgd. - 12) m. N. pr. eines Berges und Districtes (das heutige Bardwan) Kûrmakakra im Gjotistattva nach CKDR. Varah. Brh. S. 14, 7. 16, 5. Buag. P. 5, 20, 21. Mark. P. 59, 13. Kshitiç. 45, 4. 48, 7. n. N. pr. einer Stadt (vgl. वर्धमानप्र) Kathas. 24,19. Pankat. 26,10. f. आ desgl. Ver. in LA. (III) 23, 10. m. N. pr. eines Grama Raca-Tar. 4,269. m. pl. N. pr. eines Volkes Mark. P. 58, 14. - 13) m. N. pr. verschiedener Männer: der 24te Arhant der gegenwärtigen Avasarpint, = वीर H. 30. H. an. Coleba. Misc. Ess. II, 213. fgg. Wilson, Sel. Works I, 292 u. s. w. Catr. 1, 10. 26. Verz. d. B. H. No. 1364. Verz. d. Oxf. H. 186. b, 18. Gelehrte, Kaufleute, Diener Hall 21. fg. 29. 65. 72. 83. Verz. d. B. H. No. 550. 687. fgg. Verz. d. Oxf. H. 137, a, 2. 162, b, 23. 243, a, No. 601. 279, a, 41. Bhág. P. I, LXXVIII. SARVADARÇANAS. 136, 16. MRÉÉH. 45,10. Pankat. ed. orn. 3, 11. Hit. 45, 6. नव्य ° Verz. d. Oxf. H. 292, b, 8. — 14) f. 3 Bez. eines von Vardhamana verfassten Commentars HALL 21. वर्धमानक (von वर्धमान) m. 1) eine Schüssel von best. Form, = वर्ध-मान AK. 2,9,32. MBu. 14,1927. 2539. — 2) Bez. einer best. Verbindung der Hände, = वर्धमान Verz. d. Oxf. H. 86, a, 34. fg. - 3) Bez. einer ein best. Gewerbe treibenden Person: नटनर्तकगन्धर्वै: पर्णकेर्वधमानकै: । नि-त्यायागिश्च क्रीडिइस्तत्र स्म परिकृषिताः ॥ мвн. ७,२१९९. = श्रारातिक-कृत्त (wohl आराजिककृत्त) Nilak. — 4) N. pr. einer Gegend oder eines Volkes, = ਕਬੰਸਾਰ AV. Pariç. in Verz. d. B. H. 93 (56). — 5) ein Mannsname Мяккн. 26,9. Рамкат. 6,5. — 6) N. pr. eines Schlangendämons VJUTP. 86. - Vgl. पिटपली unter पिटपली 3) b) am Ende, wo noch hinzuzufügen ist ÇARNG. SAMH. 2,5,2 und पिट्यलीवर्धमान Suga. 2,417,15. वर्धमानद्वार n. das nach Vardhamana führende Thor, N. pr. eines Thores in Hastinapura MBH. 15,443; vgl. वर्धमानपुरद्वारू 1,4905. 3,10. वधेमानपुर n. N. pr. einer Stadt MBH. 1,4905. 3,10. KATHÂS. 39, 3. 124, 105. Verz. d. Oxf. H. 155, a, 24. b, 18. Pankat. 134, 2. Nilak. zu MBH. 1, 4905 erklärt ेहार durch मुख्यदार, über ेहारात् 3,10 lässt er sich

folgendermaassen aus: वर्धमानप्रं नाम ग्रामविशेष: तदभिम्खं द्वारं त-